पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2014-16

ओ३म्

कृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२०, अंकः-६-१०, मार्च-अप्रैल, सन्-२०१८, सं०-२०७५ वि०, दयानंदाब्द १६४, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११६; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-२०१८

पाखण्ड, ढोंग, अंधविश्वास, कदाचार और अज्ञान के विरुद्ध एक उभरता हुआ जनान्दोलन

राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, कैसरबाग, लखनऊ में आये दिन एक से एक कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं, किन्तु 27 मार्च 2018, मंगलवार को आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह अपनी भव्यता, दिव्यता और उपयोगिता की जो अमिट छाप छोड़ गया है; लखनऊ की जनता उसे कभी भुला नहीं पायेगी। कैमरे में कैद हुए ऐतिहासिक पलों के चित्र!

बांये से-प्रत्यूष रत्न पाडेय (संचालक), डॉ. वेद प्रकाश आर्य (प्रधान सम्पादक), इं.जे.पी.अग्रवाल (उद्घाटनकर्ता), कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य (अध्यक्ष), ठाकुर विक्रम सिंह (मुख्य अतिथि), श्रीमती नीरजा द्विवेदी (सम्मानित), श्री महेश चन्द्र द्विवेदी (अध्यक्ष काव्यसभा), सर्वमित्र शास्त्री (स्वागताध्यक्ष)

आर्य्य लोक वार्ता : पत्र नहीं स्वाध्याय है - एक नया अध्याय है।

वैदिक विचारधारा के प्रतिनिधि पत्र 'आर्य लोक वार्ता' का २०वाँ पड़ाव

आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह - २०१८

ठाकुर विक्रम सिंह एवं कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य को 'जन नायक' उपाधि

निष्ठा विद्यालंकार, नीरजा द्विवेदी, सुधा चौधरी, आचार्य विश्वव्रत को अलंकरण

अमिता विरमानी, रामा आर्य 'रमा', प्रेममुनि एवं आनन्द मनीषी को स्मृति सम्मान

निर्मल कुमार जैन और सुरेन्द्र प्रताप जौहरी मरणोपरान्त सम्मानित

उपाधि, अलंकरण एवं सम्मान का त्रिधाराधार संगम

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजनों के सर्वप्रमुख रंगमंच- रायउमानाथ बली प्रेक्षागृह, कैसरबाग, लखनऊ 27 मार्च 2018 मंगलवार को एक ऐसे भव्य और दिव्य आयोजन का साक्षी बना- जो आये दिन होने वाले आयोजनों से सर्वथा भिन्न था। यह आयोजन था- 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-2018'। सायं 5.00 बजे से रात्रि 9.30 बजे तक विविध कार्यक्रमों के प्रवाह में प्रबुद्ध आर्य जन डूबते उतराते रहे। कार्यक्रमों ने अपनी सरसता और तन्मयता पूरे समय तक बनाये रखी और प्रतिभागी एवं दर्शक गण समापन तक अपनी सीटों पर डटे रहे। आयोजनों की परम्परा में नया अध्याय जोड़ने वाले इस समारोह के मुख्य अतिथि थे- राष्ट्र निर्माण पार्टी, नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह तथा अध्यक्षता कर रहे थे सार्वदिशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के पूर्व कार्यकारी प्रधान कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य। सिंचाई विभाग उ.प्र. के पूर्व मुख्य अभियन्ता इं.जे.पी.अग्रवाल, गायत्री लोक, कनखल हरिद्वार ने समारोह का उद्घाटन किया तथा काव्य सभा की अध्यक्षता महेशचन्द्र द्विवेदी, पूर्व डी.जी.पी. ने की। प्रत्यूष रत्न ने अपने विमुग्धकारी संचालन में जनसमूह को अंत तक बांधे रखा। श्री पाल प्रवीण, रज्जू भैया, आलोक वीर आर्य, आनन्द चौधरी एडवोकेट, सर्वमित्र शास्त्री (आचार्य ओजोमित्र शास्त्री के सुपुत्र), अमित वीर त्रिपाठी ने आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम का समापन सुरुचिपूर्ण डिनर (रात्रि भोज) से हुआ।

अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन

ठाकुर विक्रम सिंह को माल्यार्पण करते हुए डॉ.मोहनलाल अग्रवाल

ठाकुर विक्रम सिंह को मानपत्र भेंट करते हुए 'विनम्र'

इं.जे.पी.अग्रवाल, डॉ.आर्य, आनन्द बाबू, ठा.विक्रम सिंह

शुभारम्भ : दीप प्रज्वलन एवं वैदिक प्रार्थना

कार्यक्रम का शुभारम्भ 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की ध्वनियों के मध्य ठाकुर विक्रम सिंह, जे.पी. अग्रवाल, महेशचन्द्र द्विवेदी, आनन्द मनीषी ने दीप प्रज्ज्वलन से किया। ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के सुप्रसिद्ध आठ वेदमंत्रों के सस्वर पाठ ने समारोह को एक स्वच्छ सुन्दर शान्त वातावरण प्रदान किया। तत्पश्चात् आलोक वीर आर्य ने सम्पादकीय प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा आज के कार्यक्रम की रूपरेखा से श्रोताओं को अवगत कराया। 'आर्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने सन् २०१६ की प्रमुख उपलब्धि- 'कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य अभिनन्दन ग्रंथ' की प्रतियां अतिथियों को भेंट कीं। नवजीवन का संचार कर देने वाले ओजस्वी आर्य भजनोपदेशक सत्य प्रकाश आर्य ने अपने भजन और उद्बोधन द्वारा सभा में उत्साह का संचार कर दिया।

उद्घाटन

समारोह का उद्घाटन गायत्री लोक कनखल हरिद्वार (उत्तराखण्ड) से पधारे योगनिष्ठ इंजीनियर श्री जे.पी.अग्रवाल (पूर्व मुख्य अभियन्ता, सिंचाई विभाग, उ.प्र.) ने किया। श्री अग्रवाल को स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्र, माल्यार्पण, प्रतीक चिन्ह इत्यादि से सम्मानित किया गया तथा 'आर्य लोक पारिजात' की उपाधि प्रदान की गई। अपने उद्घाटन भाषण में श्री अग्रवाल ने वेद प्रचार की व्यावहारिक विधियों से जनता को परिचित कराया। अमेरिका आदि देशों में श्री अग्रवाल ने प्रयुक्त वेद प्रचार के सफल तौर तरीकों की जानकारी दी, जिसका उपस्थित श्रोताओं पर विशेष प्रभाव पड़ा। आपने उन दिनों की याद दिलाई, जब १९९८ में उनके आवास बी-२३१, इन्दिरा नगर, लखनऊ में आर्य लोक वार्ता हिन्दी मासिक के प्रकाशन का निर्णय श्रद्धेय स्वामी आत्मबोध सरस्वती की उपस्थिति में लिया गया और वेद मनीषी स्व.पं.हरिवंश लाल मेहता ने ५००/-रु. की प्रथम सहयोग राशि अर्पित की थी। आर्य लोक वार्ता की प्रगति की सराहना करते हुए श्री अग्रवाल ने बिना विज्ञापन के बीस वर्षों से अविराम प्रकाशित होने के उपलक्ष्य में आर्य लोक वार्ता के संचालकों को बधाई दी।

मुख्य अतिथि का अभिनन्दन

'आर्य जन नायक' की उपाधि से विभूषित मुख्य अतिथि ठाकुर विक्रम सिंह का भावभीना अभिनन्दन किया गया। लखनऊ की जिन प्रमुख आर्य समाजों की ओर से ठाकुर साहब को माल्यार्पण किया गया- उनमें आर्य समाज डालीगंज, आदर्श नगर, चन्द्र नगर, राजाजीपुरम, इन्दिरा नगर, लाजपत नगर (चौक) के नाम प्रमुख हैं। इसके अलावा सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट, आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जिला वेद प्रचार संगठन एवं महिला शक्ति मंडल न्यास की प्रतिनिधियों ने माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। आर्य लोक वार्ता के संवाद प्रमुख कविवर गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ने स्वागत में लिखित काव्य रचना का पाठ किया तथा उसे मानपत्र के रूप में ठाकुर साहब को भेंट किया। आर्य लोक वार्ता के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने दो सवैया छन्दों को सुना कर उन्हें प्रशस्ति पत्र के रूप में ठाकुर साहब को भेंट किया-

'अरे, दूर हटो, दो राह कि
ठाकुर विक्रम सिंह जी आ रहे हैं!'

काव्य पंक्तियों का आर्य जनता ने उत्साहपूर्वक करतल ध्वनि से स्वागत किया। इसी क्रम में आर्य लोक वार्ता के युवा प्रतिनिधियों आनन्द चौधरी एडवोकेट, सर्वमित्र शास्त्री, अमित वीर त्रिपाठी, आलोक वीर आर्य एवं प्रत्यूष रत्न ने मुख्य अतिथि का अभिनन्दन किया। ठाकुर साहब के अभिन्न सहृदय रज्जू भैया तथा श्री राजपाल शास्त्री (नई दिल्ली) का इस अवसर पर हार्दिक अभिनन्दन किया गया। आर्य महिलाओं का प्रतिनिधित्व श्रीमती सत्यप्रभा शास्त्री, श्रीमती शशि त्रिपाठी, श्रीमती रश्मि त्रिपाठी एवं श्रीमती निमिषा वाजनेयी ने किया।

आर्य लोक वार्ता की ओर से ठाकुर साहब को सचित्र भव्य स्मृति चिन्ह उपहार स्वरूप भेंट किया गया तथा शॉल, अंगवस्त्रम् इत्यादि से सम्मानित किया गया।

कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य का स्वागत

मुख्य अतिथि के साथ ही समारोह के अध्यक्ष कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय संचालक ने दिया तथा उनके गौरव के अनुरूप स्मृति चिन्ह एवं प्रतीक चिन्ह समर्पित किया गया। आर्य लोक वार्ता की ओर से आपको शॉल, अंगवस्त्र भेंट किया गया। आनन्द बाबू को इस अवसर पर 'आर्य जन नायक' की उपाधि से अलंकृत किया गया।

आर्य लोक वार्ता सम्मान 2018 : उपाधि वितरण

डॉ.(श्रीमती) निष्ठा विद्यालंकार : 'वैदिक शारदीया'

'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-२०१८' के अन्तर्गत सम्मानार्थ चयनित विभूतियों में सर्वप्रथम आचार्या डॉ.(श्रीमती) निष्ठा विद्यालंकार का परिचय देते हुए संचालक ने बताया कि कानपुर जनपद के वैदिक विद्वान् श्री जयराम त्यागी की सुपुत्री तथा वेदोपदेशक श्री जलेश्वर मुनि की दौहित्री निष्ठा जी का नाम सम्पूर्ण आर्य जगत के लिए गर्व और गौरव का विषय है। आज आपकी ख्याति चतुर्दिशा में व्याप्त है। एक उत्कृष्ट श्रेणी की वक्ता, लेखिका, शिक्षिका ही नहीं, वरन् संगीत में भी अपना महत्व रखती हैं। सुप्रसिद्ध कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, सासनी की स्नातिका निष्ठा जी को इस स्थान तक पहुँचने में अनेक बाधाओं, दैवी संकटों, संघर्षों का मुकाबला करना पड़ा किन्तु ईश्वर के प्रति सच्ची निष्ठा ने सर्वत्र विजयश्री प्रदान की और आप आज गोमती नगर के ख्यातिनाम अधिवक्ता श्री समीर कुमार जी की सहधर्मिणी हैं, तथा 'अभ्युदय' नामक सुन्दर पुत्र उज्ज्वल भविष्य की तरह आपकी गोदी में सुशोभित है। निष्ठा जी को सम्मानित करते हुए उन्हें 'वैदिक शारदीया' की उपाधि से अलंकृत किया गया। निष्ठा जी ने अपने कृतज्ञता ज्ञापित करने वाले उद्बोधन में आर्य लोक वार्ता की भूरि भूरि

आलोक वीर, ठा.विक्रम सिंह द्वारा आनन्द बाबू (मध्य) को स्मृति चिन्ह

डॉ.वेद प्रकाश आर्य द्वारा जे.पी.अग्रवाल(दायें) को स्मृति चिन्ह

ठा.विक्रम सिंह को ग्रंथ भेंट करते हुए आलोक वीर

आनन्द चौधरी एडवोकेट द्वारा आनन्द बाबू का सम्मान

शशि त्रिपाठी द्वारा निष्ठा जी (दायें) को स्मृति चिन्ह

नीरजा द्विवेदी (दायें) का अतिथियों द्वारा सम्मान

निष्ठा जी द्वारा सुधा चौधरी (दायें) को स्मृति चिन्ह

श्रीमती सत्यप्रभा द्वारा सम्मान ग्रहण करती प्रियंका शास्त्री(दायें)

सराहना की तथा ठाकुर विक्रम सिंह के लोक कल्याणकारी कार्यों के लिए बधाई दी। ठाकुर विक्रम सिंह जी ने निष्ठा जी की योग्यता की सराहना की तथा कहा कि निष्ठा जी मेरी पुत्री के समान हैं।

श्रीमती नीरजा द्विवेदी : 'ज्ञान शिखा'

हिन्दी साहित्य की आधुनिक लेखिकाओं में महत्वपूर्ण स्थान की अधिकारिणी- 'शान्तिधाम', 'आप बीती जग बीती', 'स्विट्जरलैंड में २१ दिन' जैसी अनेक ख्यातिलब्ध पुस्तकों की रचयिता श्रीमती नीरजा द्विवेदी को 'ज्ञान शिखा' की उपाधि से विभूषित किया गया। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने नीरजा जी का परिचय देते हुए कहा कि नीरजा जी की कहानी 'शान्तिधाम' विश्व साहित्य में स्थान पाने योग्य है तथा उनके संस्मरण और रेखाचित्र तो महीयसी महादेवी वर्मा की याद दिलाते हैं। साहित्य सृजन के साथ ही १/१३७, विवेक खण्ड, गोमती नगर में 'ज्ञान प्रसार संस्थान' द्वारा वंचित वर्ग के बच्चों को शिक्षा प्रदान कर उन्हें श्रेष्ठ मानव बनाने की दिशा में नीरजा जी के प्रयास दिशादर्शक और प्रेरक हैं। नीरजा जी साहित्य स्रष्टा श्री महेशचन्द्र द्विवेदी (पूर्व डी.जी.पी.उ.प्र.) की सहधर्मिणी हैं।

श्रीमती सुधा चौधरी : 'विद्या विभूषण'

नारी समाज की क्षमता, शक्ति और संभावनाओं को उजागर करने वाली श्रीमती सुधा चौधरी को 'विद्या विभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया गया। सुधा जी को प्रदेश की एक प्रख्यात शिक्षा संस्था आर्य कन्या महाविद्यालय, हरदोई की प्राचार्या पद को सुशोभित करने का श्रेय प्राप्त है। आपने न कि उक्त पद की गरिमा में अभिवृद्धि की अपितु महाविद्यालय को सर्वतोमुखी प्रगति पथ पर अग्रसर किया। आपको सीतापुर के प्रख्यात शायर और समाजसेवी श्री रामस्वरूप चौधरी 'जब्त सीतापुरी' की पुत्रवधू होने का गौरव प्राप्त है। प्रख्यात चिन्तक, विचारक, लेखक तथा सेवानिवृत्त प्रशासनिक अधिकारी श्री कृष्णस्वरूप चौधरी की आप धर्मपत्नी हैं। सम्प्रति विनीत खंड-४, गोमती नगर के 'चौधरी निवास' में आप रहती हैं।

श्रीमती सुधा चौधरी ने गोमती नगर में महिला आर्य समाज का गठन किया। यज्ञ-सत्संग के अतिरिक्त कई बार वार्षिकोत्सव आयोजित किये। सम्प्रति आर्य समाज गोमती नगर को आपकी शुभाकांक्षाएँ सुलभ हैं। 'आर्य लोक वार्ता' पर आपका प्रारम्भ से वरद हस्त रहा है।

विश्वव्रत शास्त्री : 'वैदिक मंडलेश्वर'

आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-२०१८ को इस वर्ष लखनऊ में एक आध्यात्मिक चेतना की अलख जगाने वाले वैदिक विद्वान् वेदमनीषी विश्वव्रत शास्त्री को सम्मानित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आचार्य विश्वव्रत जी ने सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट का गठन करके बहुकुण्डीय यज्ञों की शृंखला द्वारा सामाजिक चेतना को जाग्रत करने का उपक्रम किया है। वेद प्रचार मंडल, जिला वेद प्रचार संगठन, आर्ष गुरुकुलम जैसी प्रमुख सहयोगी संस्थाओं के माध्यम से वृहद् वैदिक यज्ञशाला का निर्माण जानकीपुरम क्षेत्र में कराया तथा श्री आर.के.शर्मा, नवीन कुमार सहगल, चन्द्रभान सिंह, डॉ.सत्यकाम आर्य, सर्वमित्र शास्त्री, प्रियंका शास्त्री, यशोदा शर्मा, कविता सहगल जैसी अनेक सुलझे हुए विद्वानों कार्यकर्ताओं की सहायता से लखनऊ में आध्यात्मिक क्रान्ति की लहर पैदा कर दी एवं आपके संरक्षण में सम्प्रति द्वादश वेदप्रचार मंडल सक्रिय रूप में कार्यरत हैं जिनके माध्यम से जन सामान्य को अपनी आध्यात्मिक ज्ञान पिपासा को शान्त करने का मौका मिल रहा है। 'श्रुति दर्शन' त्रैमासिकी का प्रकाशन भी आपकी अन्यतम उपलब्धि है। आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह २०१८ में आपको 'वैदिक मंडलेश्वर' की उपाधि से अलंकृत किया गया। आपको मण्डलेश्वर तो बहुत मिलेंगे किन्तु वैदिक मंडलेश्वर तो आचार्य विश्वव्रत जी ही हैं। आपकी सरलता, सादगी तथा व्यवहार कुशलता सभी को आकृष्ट करती है। आर्य लोक वार्ता को प्रारम्भ से ही आपका आशीर्वाद सर्वताभावेन सुलभ है। स्मृति चिन्ह, प्रतीक चिन्ह, प्रशस्ति पत्र प्रदान करते समय सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट के अनेक सदस्य, पदाधिकारी गण, श्रीमती प्रियंका शास्त्री, श्रीमती यशोदा शर्मा, श्रीमती कविता सहगल, नवीन कुमार सहगल, रवीन्द्रनाथ तिवारी, सर्वमित्र शास्त्री इत्यादि मंच पर मौजूद थे।

आर्य लोक वार्ता सम्मान 2018 : स्मृति सम्मान

'पृथ्वीराज-लीला विरमानी स्मृति सम्मान' : अमिता विरमानी

वेदों के प्रति अगाध श्रद्धा का पर्याय है श्रीमती अमिता विरमानी का नाम। आप आर्य समाज चन्द्र नगर के प्रधान श्री अरुण कुमार विरमानी की सहधर्मिणी हैं। कई वर्षों तक स्मृतिशेष जगदीशलाल खत्री के सान्निध्य में आर्य समाज चन्द्र नगर के मंत्री पद पर कार्य करने का अनुभव आपको प्राप्त है। श्रीमती अमिता विरमानी को यह सम्मान आर्य समाज चन्द्र नगर के संस्थापक सदस्य- गायक, वक्ता, प्रचारक स्व.पृथ्वीराज विरमानी एवं लीला विरमानी की स्मृति के सम्मान स्वरूप दिया गया। अमिता विरमानी को 'आर्य लोक विभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया गया।

'माता सुखरानी देवी स्मृति सम्मान' : 'रामा आर्य रमा'

हिन्दी की वरिष्ठ कवयित्री, श्रीमती रामा आर्य 'रमा' को माता सुखरानी देवी स्मृति सम्मान प्राप्त करने का गौरव मिला है। धर्म पारायण, अनुराग, त्याग, दानशीलता, परोपकार, करुणा की प्रतिमूर्ति माता सुखरानी देवी जी रमा जी की माता थीं। सन् १९६५ को वे संसार से विदा हो गई थीं। रमा जी अपनी माता जी की प्रतिकृति हैं। माता जी का प्रेम और आशीर्वाद आज भी आपके साथ है। माता सुखरानी देवी की दो अन्य पुत्रियां श्रीमती कमला देवी शुक्ल (हरिद्वार) तथा श्रीमती विमला देवी शुक्ल (तेरिया, हरदोई) हैं। श्री पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी एवं डॉ.वेद प्रकाश आर्य सुखरानी देवी के दो पुत्र हैं किन्तु इन सबमें रमा जी अपनी काव्य प्रतिभा के बल पर श्रेष्ठतम स्थान की अधिकारिणी हैं। 'गौरव भारती', 'रमा सतसई', 'अभिव्यक्ति', 'ममता', 'महकी माटी चहका जीवन' इत्यादि रमा जी की काव्य कृतियां हैं। आपकी कविताएँ आकाशवाणी लखनऊ द्वारा अक्सर प्रसारित होती रहती हैं। आपको 'आर्य लोक वार्ता वाणी पारिजात' की उपाधि से अलंकृत किया गया।

'महात्मा आर्यभिक्षु स्मृति सम्मान' : महात्मा प्रेममुनि

महात्मा प्रेममुनि को 'महात्मा आर्यभिक्षु स्मृति सम्मान' प्रदान किया गया। आर्य समाज डालीगंज (हसनगंज पार) के प्रधान पं.प्रेमशंकर शुक्ल ने २०१५ में वानप्रस्थ की दीक्षा प्राप्त की तथा प्रेममुनि के नाम से विख्यात हुए। यद्यपि आपकी कुटिया (निवास स्थान) आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर हरिद्वार में है तथापि लखनऊ के निवासियों को भी अपनी उपस्थिति और सेवाओं से उपकृत करते रहते हैं। आप बैंक आफ बड़ौदा के उच्चाधिकारी के रूप में कार्यरत थे। आज आप प्रवचन के साथ ही सुमधुर भक्ति गीतों का गायन भी करते हैं। आपको 'आर्य लोक विभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया गया। २०१५ में सम्पन्न आर्य समाज डालीगंज की ऐतिहासिक स्थापना शताब्दी महोत्सव के बृहद आयोजन का श्रेय महात्मा जी के नाम है। खास बात यह है कि स्व.आर्यभिक्षु जी की भाँति प्रेममुनि जी ने भी सप्ताह में एक दिन मौन व्रत धारण करना प्रारंभ कर दिया है। आर्य लोक वार्ता की शुभकामनाएँ!

'ज्ञानेश्वर आर्य स्मृति सम्मान' : आचार्य आनन्द मनीषी

स्मृति सम्मानों की शृंखला की सबसे मजबूत कड़ी के रूप में आर्य समाज वेद मंदिर राजाजीपुरम लखनऊ के प्रेरणास्रोत, निर्माता, संरक्षक, पूर्व प्रधान आचार्य आनन्द मनीषी को प्रख्यात वैदिक गवेषक विश्व वेद प्रचारक 'आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया गया। आयुर्वेद निदेशक के पद से सेवा निवृत्त होकर डॉ.आनन्द कुमार वर्णवाल (पूर्वनाम) ने २०१५ में वानप्रस्थ में प्रवेश किया। उसी समय आर्य लोक वार्ता द्वारा आपको आचार्य आनन्द मनीषी का अभिधान प्रदान किया गया था। आनन्द मनीषी जी अहर्निश वेद प्रचार में संलग्न रहते हैं। आपके निर्देशन में आर्य समाज राजाजीपुरम ने वेद प्रचार के साथ ही चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं जनसेवा कार्य का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

आनन्द मनीषी जी के संरक्षण में आर्य समाज राजाजीपुरम द्वारा वैदिक श्राद्ध की परम्परा प्रारंभ की गई; जिसका अनुसरण आज अनेक आर्य समाजों द्वारा किया जा रहा है। जीवित मातापिता, पितामह की सेवासुश्रूषा का अनुकरणीय आदर्श स्थापित किया गया है सामाजिक समन्वय, सद्भावना और सम्मिलन का नायाब नमूना है आर्य समाज राजाजीपुरम। आपको श्री निरंजन सिंह, प्रतिज्ञा शास्त्री, रमाकान्त सिंह, महेन्द्रदेव पाण्डे, काशी प्रसाद शास्त्री, वीना उतरेजा, आशा अग्रवाल, भानु प्रकाश आर्य, एन.बी.सक्सेना, धुरेन्द्र स्वरूप बिसारिया इत्यादि सभी का स्नेह सहयोग प्राप्त है। आनन्द मनीषी को आर्य लोक वार्ता द्वारा 'आर्य लोक पारिजात' की उपाधि प्रदान की गई।

आर्य लोक वार्ता सम्मान 2018 : मरणोपरान्त सम्मान

कुछ ऐसे व्यक्ति भी संसार में आते हैं; जो जीवन पर्यन्त दीप-शिखा की तरह समाज को प्रकाश देते हैं, मार्गदर्शन करते हैं; संसार से जाने के बाद भी उनका प्रकाश बना रहता है- ऐसे दो व्यक्तियों को मरणोपरान्त सम्मान देकर 'आर्य लोक वार्ता' ने अपनी कृतज्ञता भावना से सभी को अभिभूत कर दिया। ऐसे दो व्यक्ति थे- कपड़ा कोठी इन्दिरा नगर के संस्थापक निर्मल कुमार जैन तथा आर्य समाज आदर्श नगर के स्वाध्यायशील सदस्य सुरेन्द्र प्रताप जौहरी-

तू नहीं पर तेरी याद हर किसी के दिल में है,
बुझ गई है शमा फिर भी रोशनी महफिल में है!

निर्मल कुमार जैन

सामाजिक एवं पारिवारिक एकता-सद्भावना के प्रतीक पुरुष 'कपड़ा कोठी का योगी' श्री निर्मल कुमार जैन को मरणोपरान्त सम्मानित करते हुए 'आर्य लोक संस्कृति गौरव' की उपाधि से विभूषित किया गया। स्मरण रहे, श्री निर्मल कुमार जी १९९८ में 'आर्य लोक वार्ता' के संस्थापकों में प्रमुख थे तथा जीवन भर उन्होंने कपड़ा व्यावसाय के क्षेत्र में सर्वोच्च मानक स्थापित किये तथा साथ ही वैदिक संस्कार, यज्ञ, हवन, योग साधना इत्यादि कार्यक्रमों को बराबर प्रोत्साहित किया। निर्मल बाबू को सम्मानित करने की योजना तो उनके जीवन काल में ही बन गई थी; किन्तु ईश्वरीय व्यवस्था को शायद यह मंजूर नहीं था और ०४.०२.१८ को आकस्मिक रूप में उन्होंने निर्वाण प्राप्त किया। आज वे हमारे मध्य नहीं हैं किन्तु उनके महान् कार्य सदैव उनकी याद दिलाते रहेंगे और समाज को सत्प्रेरणा प्रदान करेंगे। आपकी अनुपस्थिति में यह सम्मान आपके सुयोग्य पुत्र श्री अजय कुमार जैन जी ने ग्रहण किया। श्री अजय बाबू के प्रति 'आर्य लोक वार्ता' ने हार्दिक आभार प्रकट किया।

सुरेन्द्र प्रताप जौहरी

मरणोपरान्त सम्मान प्राप्त करने वाले दूसरे महापुरुष हैं- श्री सुरेन्द्र प्रताप जौहरी। आर्य समाज आदर्श नगर के स्वाध्यायशील, कर्मठ, उदार, दानशील सदस्य के रूप में श्री जौहरी की सेवाएँ कभी भुलाई नहीं जा सकेंगी। अस्वस्थता की भी दशा में आपको वेद प्रचार की धुन लगी रहती थी। जौहरी साहब का सम्पूर्ण परिवार वैदिक आदर्शों का अनुयायी रहा है। अभी कुछ दिन पूर्व उनकी पत्नी श्रीमती जौहरी

शशि त्रिपाठी द्वारा रामा आर्य 'रमा' (दायें) को स्मृति चिन्ह

रश्मि त्रिपाठी द्वारा अमिता विरमानी, अरुण विरमानी का सम्मान

प्रेम मुनि (मध्य) को सम्मानित करते हुए देवेन्द्रनाथ चौधरी

पाल प्रवीण द्वारा आनन्द मनीषी (मध्य) को स्मृति चिन्ह

प्रत्यूष रत्न द्वारा रुद्र स्वरूप जी (दायें) को स्मृतिचिन्ह

डॉ.वेद प्रकाश आर्य द्वारा अजय कुमार जैन (बायें) को स्मृतिचिन्ह

'अतिथियों द्वारा धधकते पृष्ठ' काव्य विमोचन

सुरेश चन्द्र तिवारी द्वारा काव्यपाठ

उनका साथ छोड़ गई थीं। अंतिम क्षण सुरेन्द्र प्रताप जी ने साहस, संयम, धैर्य का परिचय दिया। आस्तिकता की तो आप प्रतिमूर्ति ही थे। 'आर्य लोक वार्ता' के प्रति आपका गहरा लगाव था और प्रत्येक अवसर पर आप आर्य लोक वार्ता का सहयोग करते रहते थे। श्री सुरेन्द्र प्रताप जौहरी को 'आर्य लोक गौरव' की उपाधि प्रदान करने में आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह २०१८ ने अपने को कृतकृत्य अनुभव किया। श्री जौहरी का यह सम्मान आर्य समाज आदर्श नगर के वेद प्रचारक, पूर्व मंत्री श्री रुद्र स्वरूप ने उपस्थित होकर ग्रहण किया। आयोजकों ने श्री रुद्र स्वरूप के प्रति हार्दिक आभार प्रकट किया।

समारोह का द्वितीय चरण

राष्ट्रगौरव को उद्वेलित करने वाले काव्य 'धधकते पृष्ठ' का विमोचन

सम्मान-अभिनन्दन संबन्धी समारोह के प्रथम चरण के सम्पन्न होते ही द्वितीय चरण- राष्ट्रगौरव को उद्वेलित करने वाले काव्य 'धधकते पृष्ठ' के विमोचन के साथ प्रारंभ हुआ। काव्य का परिचय देते हुए डॉ. वेद प्रकाश आर्य ने स्पष्ट किया कि यह काव्य देश के उन वीर सपूतों को एक विनीत श्रद्धांजलि है; जिन्होंने राष्ट्र की रक्षार्थ अपने प्राणों की आहुति दी है। आपने कहा- चीन और पाकिस्तान के विश्वासघात पूर्ण आक्रमणों से राष्ट्र की रक्षा में जिन युवकों ने अपने प्राण न्योछावर कर दिये- वह जौहर की ज्वालाओं से किसी भी तरह कम नहीं है। 'धधकते पृष्ठ' इन्हीं शूरमाओं के बलिदान की कहानियाँ आधुनिक वर्तमान युग की परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में एक प्रेरक संदेश के साथ वर्णित हैं। ठाकुर विक्रम सिंह एवं कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य के साथ समस्त अतिथियों ने 'धधकते पृष्ठ' काव्य का विमोचन किया तथा यह विश्वास प्रकट किया कि यह पुस्तक कवि की कामनाओं के अनुरूप देश की एकता अखंडता एवं संप्रभुता की रक्षा हेतु राष्ट्र को सन्नद्ध करने में सफल होगी, जैसा कि कवि ने आकांक्षा व्यक्त की है-

दे यही आदेश, मेरे देश,
ओ शाश्वत चितेरे,
राष्ट्र को सन्नद्ध कर दें-
ये 'धधकते पृष्ठ' मेरे।

स्वर्ण में सुगन्ध का संचार करते हुए 'धधकते पृष्ठ' काव्य की गुरुपुत्रों के दीवार में चुने जाने वाले बलिदान पर आधारित 'दो अनमोल मोती' कविता का सस्वर पाठ श्री सुरेश चन्द्र तिवारी ने किया; जिसे सुनकर भावमुग्ध श्रोताओं के आँखों में छलकते हुए अश्रुकणों ने काव्य की मार्मिकता एवं हृदय स्पर्शिता का प्रमाण दे दिया।

समारोह का तृतीय चरण : सरस काव्यधारा

कवियों ने दी आयोजन को सरसता और सम्पूर्णता

आर्य लोक वार्ता के गरिमापूर्ण एवं भव्य आयोजन को अनेक प्रख्यात कवियों ने अपने काव्यपाठ से सरसता एवं सम्पूर्णता प्रदान की। वरिष्ठ साहित्यकार एवं पूर्व पुलिस महानिदेशक उ.प्र. श्री महेश चन्द्र द्विवेदी की अध्यक्षता और श्रीयुत श्रीशरत्न पाण्डेय के सफल संचालन में कवि सम्मेलन का शुभारंभ वरिष्ठ गीतकार श्री अमृत खरे ने किया। श्री खरे के वैदिक मंत्रों के चर्चित काव्यानुवाद को उन्हीं के मुख से सस्वर सुनना श्रोताओं के लिए एक सुखद अनुभव रहा। श्री खरे ने वैदिक मंत्रों के काव्यानुवाद के गीतों को जब अपना स्वर प्रदान किया, तो श्रोताओं के हृदय अनिर्वचनीय आनन्द से पुलकित हो उठे-

तुम नदिया, हम मीन मछरिया
तुम जलधारा, हम गागरिया
तुम समर्थ, फिर क्यों हम प्यासे
तृप्त करो सुख को सरसा दो!
प्राण! हमारी प्यास बुझा दो!

अनेक पुरस्कारों एवं सम्मानों के विजेता डॉ.कैलाश निगम ने संचालक के आग्रह पर अपना लोकप्रिय गीत सुनाया; जिसने न कि सभी का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया, वरन् एक सामाजिक संदेश भी दिया कि गाँवों की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए-

वह गाँव जहाँ प्यार के रिश्ते अनेक हों,
वह गाँव जहाँ सीधे सादे लोग नेक हों,
मजहब हों जातियाँ हों या रिवाज अलग पर
त्योहार किसी का हो सभी लोग एक हों!
अपनत्व भरा मुझको वही ठाँव दीजिए,
यदि हो सके तो मुझको वही गाँव दीजिए!

गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ने अपने शिक्षाप्रद दोहों से समजा को एक स्वस्थ और सार्थक दिशा प्रदान की-

वेदों का अनुसरण हो, आर्यों का सद्धर्म,
वेद पठन पाठन श्रवण, नित नियमित हो कर्म।
घोर अविद्या नष्ट हो, विद्या की हो वृद्धि,
सबकी उन्नति में निहित, जग की परम समृद्धि।

श्री महेशचन्द्र द्विवेदी ने एक छोटे से सुनसान रेलवे स्टेशन के माध्यम से जीवन के सूनेपन को उजागर किया। सरल काव्य भाषा में दार्शनिक अंदाज श्रोताओं को गुदगुदाने में कामयाब रहा-

मैं चिरक्लान्त, अनिद्राविक्षिप्त अदना सा एक रेलवे स्टेशन हूँ
लोकल, मेल और माल सभी गाड़ियाँ यहाँ आती हैं।
कुछ रुकती हैं कुछ धड़धड़ाती चली जाती हैं।
पर मुझे झकझोरने में कोई नहीं चूकती हैं।
मैं शान्ति को तरसता हूँ, निद्रा का प्यासा हूँ,
निर्मम हो मुझे निशदिन जगाती हैं रेलगाड़ियाँ।

रेलवे के काव्य बिम्ब के सहारे श्री श्रीशरत्न पाण्डेय ने अपनी बहुप्रशंसित लोकप्रिय कविता सुनाई, जो एक लोको पायलट की जिन्दगी के यथार्थ को रसात्मकता के साथ व्यक्त करती है। कविता की पंक्तियें को श्रोताओं ने दुहराकर अपनी प्रसन्नता का परिचय दिया-

घर में मिटटी हो जाये,
हमको नहीं बताते,
मुंडन, शादी, अन्नप्राश,
सब इंजन में हो जाते,
हम रेल चलाने वाले हैं,
धरती को सरकाने वाले हैं!

समारोह का अंतिम चरण

'धधकते पृष्ठ' काव्यचर्चा गोष्ठी

'धधकते पृष्ठ' की कविताएँ समय की गांग को पूरा करती हैं

'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-२०१८' का समापन समारोह २ अप्रैल २०१८ को वरिष्ठ साहित्यकार एवं उत्तर प्रदेश के पूर्व पुलिस महानिदेशक श्री महेशचन्द्र द्विवेदी के गोमती नगर (लखनऊ) स्थित आवास पर सम्पन्न हुआ। इसमें 'भाषा संस्थान' उत्तर प्रदेश के पूर्व अध्यक्ष एवं पूर्वांचल की आचार्य परम्परा के शीर्षपुरुष डॉ.कन्हैया सिंह को आर्य लोक वार्ता का शिखर सम्मान प्रदान किया गया और डॉ.वेद प्रकाश आर्य की सद्यः लोकार्पित पुस्तक 'धधकते पृष्ठ' पर केन्द्रित परिचर्चा सम्पन्न हुई।

कार्यक्रम की गरिमापूर्ण अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार एवं 'ज्ञान प्रसार संस्थान' की संरक्षक श्रीमती नीरजा द्विवेदी ने की। शुभारम्भ डॉ.कन्हैया सिंह द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। श्रीमती नीरजा द्विवेदी ने वाणी वन्दना की। डॉ.वेद प्रकाश आर्य द्वारा वैदिक राष्ट्र वन्दना एवं उपस्थित विद्वत्जनों ने डॉ.कन्हैया सिंह को माल्यार्पण कर तथा श्रीमती नीरजा द्विवेदी को पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया।

डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने पूर्व प्राचार्य व रीडर-अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, दयानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आजमगढ़ (उ.प्र.) तथा पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष, उ.प्र. हिन्दी भाषा संस्थान (लखनऊ) डॉ.कन्हैया सिंह को योग्य शिक्षक, सुधी समीक्षक, नैसर्गिक शोधकर्ता, अनथक शोध निर्देशक, मोहक व्याख्याता, राष्ट्रीय एकात्मवाद के पोषक, लोकतंत्र के सजग प्रहरी और आचार्य परम्परा के शीर्ष पुरुष बताते हुए नमन किया। डॉ.आर्य ने डॉ.सिंह को अपनी प्रेरणा और शक्ति का स्रोत बताते हुए अपने बीच के अनेक प्रेरणास्पद तथा भावुक संस्मरणों को साझा किया। श्री महेशचन्द्र द्विवेदी ने डॉ. कन्हैया सिंह को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। आर्य लोक वार्ता की ओर से उन्हें सुदर्शन स्मृतिचिन्ह भेंट किया गया। श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को महिमामण्डित करते अनेक दोहे सुनाये।

आयोजन का उत्तरार्ध राष्ट्र गौरव को उद्वेलित करने वाली डॉ.वेद प्रकाश आर्य की लोक प्रशंसित कविताओं के संग्रह 'धधकते पृष्ठ' को समर्पित रहा। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने कहा कि देश की प्रभुसत्ता पर पड़ने वाली प्रत्येक चोट का प्रतिकार करती रही है 'धधकते पृष्ठ' की कविताएँ! ये माँ भारती के सपूतों के लिये ललकार रही हैं-'मिटना है स्वीकार, मगर झुकना स्वीकार नहीं!' परिस्थितियाँ जैसी पूर्व में रही हैं, वैसी ही आज भी हैं। चीन जैसा तब था, वैसा ही आज है। पाकिस्तान जैसा तब था, वैसा ही आज है! घर में राष्ट्र विरोधी ताना-बाना लगातार बुना जा रहा है! इन कविताओं की प्रासंगिकता जस की तस बनी हुई है। 'धधकते पृष्ठ' की कविताएँ प्रकाशित होकर समय की मांग को पूरा कर रही हैं।

श्री महेशचन्द्र द्विवेदी ने कहा कि 'धधकते पृष्ठ' की कविताओं को पढ़ते हुए उन्हें गाँव की रामलीला में होते रहे 'परशुराम-लक्षमण' संवाद के मंचन याद आते रहे। परशुराम के संवाद, अभिनय और क्रोधाभिव्यक्ति तभी श्रोताओं-दर्शकों को चमत्कृत करती थी जब वह अभिनय करते,

काव्य पाठ करते हुए- (बायें से) अमृत खरे, डॉ.कैलाश निगम, गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', महेश चंद्र द्विवेदी, श्रीशरत्न पाण्डेय, डॉ.आर्य

डॉ.कन्हैया सिंह (मध्य)

विनम्र, अमृत खरे, डॉ.आर्य, डॉ.कन्हैया सिंह, द्विवेदी जी, डॉ.रामकठिन सिंह

'ज्ञान प्रसार संस्थान' की छात्राओं द्वारा कविता पाठ

बायें से-अमृत खरे, डॉ.आर्य, डॉ.कन्हैया सिंह, विनम्र, नीरजा द्विवेदी

संवाद बोलते क्रोध में तख्त ही तोड़ देते थे। लोग प्रशंसा करते और कहते परशुराम के संवाद और अभिनय तख्त तोड़ रहे! 'धधकते पृष्ठ' की कविताएँ भी 'तख्त तोड़' हैं, निस्संदेह!

अमृत खरे ने समीक्षार्थ 'धधकते पृष्ठ' में प्रकाशित अपनी 'अनुभूमिका' का उल्लेख करते हुए कहा कि हमारे इतिहास में बार-बार लगाई गयी आग अभी भी बुझी नहीं है। इसके पृष्ठ आज भी धधक रहे हैं। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने इन धधकते पृष्ठों को अपनी ओजस्वी कविताओं में समेट कर समाज को सौंप दिया है। यह कविताएँ समाज को जाग्रत करेंगी और नेतृत्व को सचेत।

अपने सम्बोधन में डॉ.कन्हैया सिंह ने डॉ.वेद प्रकाश आर्य को अत्यंत ऊर्जावान और ओजस्वी कवि बताया और आजमगढ़ प्रवास के दौरान कवि की नैसर्गिक काव्य प्रतिभा के प्रस्फुटन का खाका खींचा। उन्होंने बताया कि श्रीश्यामनारायणा पाण्डेय, गुरुभक्त सिंह भक्त प्रभृत कवियों के समान डॉ. आर्य भी मंच लूटने वाले ओजस्वी कवियों में एक थे। उन्होंने कहा कि जैसे डॉ.आर्य की काव्य-प्रतिभा नैसर्गिक है, वैसे ही राष्ट्र के प्रति उनकी संवेदना, राष्ट्र प्रेम और भारतीय धर्म, संस्कृति, सभ्यता और

संचालक- प्रभूष रत्न पाण्डेय

भजनोपदेशक सत्य प्रकाश आर्य

दर्शन के प्रति उनका लगाव भी नैसर्गिक है। कहीं कोई बनावट नहीं। ओजस्वी कवि होने के साथ साथ डॉ.आर्य का ओजस्वी वक्ता होना सोने पर सुहागे की उक्ति को चरितार्थ करता है। डॉ.कन्हैया सिंह ने कहा कि 'धधकते पृष्ठ' काव्य संग्रह प्रासंगिक है, उद्‌बोधक है और सुषुप्त नाड़ियों में रक्त संचार करने में सक्षम है। मैं इसका स्वागत करता हूँ। रचनाकार को बधाई देता हूँ।

इस अवसर पर 'ज्ञान प्रसार संस्थान' की छात्राओं ने 'धधकते पृष्ठ' की अनेक कविताओं को एकल और समवेत स्वरों में गा कर सुनाया। उपस्थित श्रोताओं ने मात्र एक दिन की नोटिस पर प्रस्तुति के लिये अपने को तैयार कर लेने पर उनकी भूरि भूरि प्रशंसा की।

समारोह की अध्यक्ष श्रीमती नीरजा द्विवेदी ने 'आर्य लोक वार्ता' को सुरुचि सम्पन्न आयोजन के लिये साधुवाद एवं बधाई दी। श्री महेशचन्द्र द्विवेदी ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में 'ज्ञान प्रसार संस्थान' की छात्राओं के अलावा डॉ.रामकठिन सिंह, राजेश कुमार शर्मा, डॉ.वी.पी.कपूर, मृत्युंजय प्रसाद गुप्त जैसे प्रख्यात काव्य चिन्तकों की मौजूदगी ने संगोष्ठी को चिरस्मरणीय बना दिया।

आलोक वीर द्वारा प्रस्तुत सम्पादकीय प्रतिवेदन

अनेक झंझावातों का मुकाबला करता हुआ- आपका प्रिय हिन्दी मासिक 'आर्य लोक वार्ता' २०वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-२०१८' के अवसर पर हम अपने समस्त सहयोगियों, लेखकों, रचनाकारों तथा स्वाध्यायशील पाठकों एवं सहयोगकर्ताओं का अभिनन्दन करते हैं तथा हार्दिक आभार प्रकट करते हैं। 'आर्य लोक वार्ता' की विज्ञापनों के इस युग में एक विज्ञापन रहित समाचार पत्र की गौरव पूर्ण एवं गरिमामयी यात्रा का सम्पूर्ण श्रेय आप सभी को है, हम तो निमित्त मात्र हैं।

निष्पक्ष स्वाध्यायशील पाठकों के एक सर्वेक्षण में 'आर्य लोक वार्ता' हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्र प्रमाणित हुआ है। इसकी प्रमुख विशेषता निम्नांकित है-

१. अन्धविश्वास, पाखण्ड, गुरुडम, रूढ़िवाद और अज्ञान के विरुद्ध संघर्षरत द्वेषभावना से रहित यह एकमात्र हिन्दी मासिक है।
२. बिना किसी विज्ञापन के; अथवा शासकीय या अशासकीय अनुदान के निरंतर १९वर्षों से प्रकाशित।
३. आर्य लोक वार्ता के स्थायी स्तम्भ बेजोड़ हैं। 'विनय-पीयूष' (वेदमंत्र का काव्यात्मक अनुवाद हिन्दी में प्रथम बार), 'सत्यार्थ प्रकाश वार्ता', 'वेद प्रवचन', 'सम्पादकीय', 'दयानन्द चरितम्' (आचार्य दीपंकर का संस्कृत काव्य), 'होता सदस्य परिचय', 'जिज्ञासा-समाधान', 'काव्यायन', धारावाहिक 'मनुष्य का विराट रूप', व्याख्यान माला 'अनन्त की खोज', 'शुभाकांक्षा', 'अक्षरलोक'(पुस्तक समीक्षा), 'वाचनालय से'(विविध समाचार पत्रों की समीक्षा), स्थानीय तथा राष्ट्रीय समाचार।
४. दलबंदी, गुटबाजी, व्यक्तिगत निन्दा या प्रशंसा से रहित महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों का सच्चा पोषक।
५. सम्पादकीय लेखों का संकलन-'अमृत पुत्रो! सुनो' प्रकाशित एवं सर्वप्रशंसित।
६. समय-समय पर 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोहों' का आयोजन कर विद्वानों, समाजसेवकों को सम्मानित किया जाता है।
७. 'आर्य लोक वार्ता के मौलिए एवं लोकोपकारी प्रकाशन-
   (1) वैदिक यज्ञ प्रकाश- यज्ञ, हवन की संस्कार विधि के अनुसार प्रामाणिक पुस्तक।
   (2) अमृत पुत्रों! सुनो-सम्पादकीय लेखों का संकलन।
   (3) मयूर पंख-हिन्दी के मूर्धन्य गीतकार अमृत खरे की कविताओं का संकलन।
   (4) ब्रह्मोपासना और उसका विज्ञान-स्वामी सत्यबोध सरस्वती का एक अद्‌भुत आध्यात्मिक ग्रंथ।
   (5) आत्मबोध उपदेशामृत-स्वामी आत्मबोध सरस्वती 'आर्यभिक्षु' का जीवन और विचार।
   (6) मिश्रीलाल आर्य : एक प्रेरक व्यक्तित्व-प्रख्यात आर्यनेता बाबू मिश्री लाला आर्य, ठाँडा के जीवन पर प्रमाणिक ग्रन्थ।
   (7) वेदमनीषी विशेषांक- वेदमनीषी पं.हरिवंश लाल मेहता।
   (8) आचार्य विद्यासागर दीक्षित विशेषांक- आचार्य विद्यासागर दीक्षित का जीवन और साहित्य।

आर्य लोक वार्ता स्वाध्याय केन्द्र

जो स्वाध्याय केन्द्रों का एक मिशन के रूप में संचालन कर रहे हैं- हमारे सम्मान, श्रद्धा, स्नेह के पात्र हैं। स्वाध्याय केन्द्रों की तालिका निम्न प्रकार है-

(1) डॉ.सत्य प्रकाश- प्रकाश होम्यो हॉल, सदर बाजार, सण्डीला, जिला हरदोई
(2) श्री वीरेन्द्र कुमा आर्य 'वीरजी'- 150, नई बस्ती, सीतापुर
(3) श्री राज कुमार शास्त्री- आर्य समाज, पारा रमनगरा, सीतापुर
(4) श्री पाल प्रवीण- वैदिक सत्संग, एम.एस.-120, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ
(5) आचार्य आनन्द मनीषी- आर्य समाज वेद मंदिर, राजाजीपुरम, लखनऊ
(6) श्री रण सिंह- आर्य समाज, चन्द्र नगर, आलमबाग, लखनऊ
(7) श्री आत्म प्रकाश बत्रा- आर्य समाज, आदर्श नगर, आलमबाग, लखनऊ
(8) श्री डोरी लाल आर्य- आर्य समाज, इन्दिरा नगर, लखनऊ
(9) आचार्य आनन्द मनीषी- आर्य समाज वेद मंदिर, राजाजीपुरम, लखनऊ
(10) श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'- 117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ
(11) श्री बालगोविन्द पालीवान- आर्य समाज, गोमती नगर, लखनऊ
(12) डॉ.मोहनलाल अग्रवाल- आर्य समाज, लालबाग, लखनऊ

विशेष धन्यवाद

१. आनन्द चौधरी एडवोकेट, मंत्री, आर्य समाज डालीगंज ने विशिष्ट अतिथियों के लिए सुंदर बैज तथा सामान्य अतिथियों के गले में डालने वाले सम्मान प्रतीक बनवाकर विशेष सहयोग दिया।
२. सर्वमित्र शास्त्री अपनी पारिवारिक जयपुर यात्रा बीच में छोड़कर समारोह में सम्मिलित हुए और समारोह को सफल बनाने में सहयोग किया।
३. श्री पाल प्रवीण, संस्थापक-आचार्य विद्यासागर फाउण्डेशन ने अपनी पत्नी श्रीमती कमलेश पाल के ऑपरेशन के उपरान्त समय निकालकर कार्यक्रम में पहुँचकर सहयोग प्रदान किया।
४. श्री रण सिंह, संरक्षक-आर्य समाज चन्द्र नगर की पत्नी का पी.जी.आई. उसी दिन जटिल ऑपरेशन हुआ था, तथापि सायंकाल कार्यक्रम में पहुँचे।
५. श्री रुद्र स्वरूप, आर्य समाज आदर्श नगर ने स्व.सुरेन्द्र प्रताप जौहरी का मरणोपरान्त सम्मान आकर ग्रहण किया।
६. महिला शक्ति मण्डल न्यास की अध्यक्ष गीता गुप्त, मंत्री श्रीमती वीना गौतम तथा हेमलता शर्मा व हेमा तिवारी समारोह में प्रथम बार शामिल हुईं।
७. श्री अमन मिश्र, सचिव सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट का सक्रिय सहयोग।

आर्य्य लोक वार्ता

'ऋत्विक्-मंडल'

(प्रतिवर्ष 1500 रु. या अधिक सहयोगकर्त्ता)

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, ज्वालापुर, **हरिद्वार**; विद्यासागर फाउण्डेशन, **मेरठ**; अम्बिका प्रसाद एडवोकेट, **लखनऊ**; आनन्द कुमार आर्य, **कोलकाता**; पाल प्रवीण, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती कमलेश पाल, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती प्रमोद कुमारी, अलीगंज, **लखनऊ**; अभिषेक, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती गीतांजलि, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती मिनी स्वरूप, **नई दिल्ली**; कर्नल पाल प्रमोद, **मेरठ**; अरविन्द कुमार, आर्कीटेक्ट, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती शालिनी कुमार, आर्कीटेक्ट, गोमती नगर, **लखनऊ**; डॉ.प्रशिषा, प्रधानाचार्या, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज, टाण्डा, **अम्बेडकरनगर**; श्रीमती मधुर भंडारी, **नई दिल्ली**; पीयूष गुप्त, **सिंगापुर**; श्रीमती प्रकाश अग्रवाल, **बरेली**; डॉ.सी.वी.पाण्डेय, सर्वोदय नगर, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**; श्रीमती प्रमिला पाल, मवाना, **मेरठ**; दीपक कुमार दर्शन, अमीनाबाद **लखनऊ**; बी.एन.टण्डन, **बहराइच**; अनूप टण्डन, **मेरठ**; वेद प्रकाश बटुक, **मेरठ**; नरेन्द्र भूषण, जानकीपुरम, **लखनऊ**; आर. सी. यादव, सत्या क्लीनिक, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**; चौधरी रणवीर, प्रधान, आर्य समाज, **सीतापुर**; श्रीमती मनीषा त्रिवेदी, **दुबई**; अर्जुनदेव चढ्ढा, कोटा, **राजस्थान**; नरसिंह पाल एडवोकेट, राजीव नगर, **लखनऊ**; श्रीमती मीना दीक्षित, गोमती नगर, **लखनऊ**; इं.जे.पी.अग्रवाल, गायत्रीलोक, कनखल, **हरिद्वार**; श्रीमती प्रियदर्शिनी मित्तल, **बंगलौर**; आर.के.शर्मा, जानकीपुरम, **लखनऊ**; बाँके बिहारी 'हर्ष', अवध मोटर वर्क्स, **फैजाबाद**; श्रीमती रामा आर्य 'रमा', नेवाजगंज, **लखनऊ**; श्रीमती मालती त्यागी, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती कृष्णा बजाज, **बरेली**; श्रीमती रेनू भसीन, चन्द्रनगर, **लखनऊ**; श्रीमती प्रियंका शर्मा, जानकीपुरम, **लखनऊ**; महात्मा प्रेममुनि, आर्य समाज, हसनगंज पार, **लखनऊ**; श्रीमती अनीता सिंह, प्रिंसिपल, डी.ए.वी.एकेडमी, टाँडा, **अम्बेडकरनगर**; श्रीमती वेद रतना खत्री, हिन्द नगर, आलमबाग, **लखनऊ**; श्री आत्म प्रकाश बत्रा, आर्य समाज, आदर्श नगर, **लखनऊ**; श्री विश्वमित्र शास्त्री, आर्य समाज, अलीगंज, कुर्सी रोड, **लखनऊ**; श्री रण सिंह, आर्य समाज, चन्द्र नगर, **लखनऊ**; रवीन्द्र त्यागी, गोमती नगर, **लखनऊ**; महेशचन्द्र द्विवेदी, विवेक खण्ड, गोमती नगर, **लखनऊ**; कुमुद गुप्ता, अलीगंज, **लखनऊ**; आचार्य आनन्द मनीषी, राजाजीपुरम, **लखनऊ**; श्रीमती यशोदा शर्मा, जानकीपुरम्, **लखनऊ**; कृष्ण स्वरूप चौधरी, गोमती नगर, **लखनऊ**; सुधा चौधरी, गोमती नगर, **लखनऊ**; डॉ.सत्यकाम आर्य, जानकीपुरम, **लखनऊ**।

सम्पादकीय

'धधकते पृष्ठ' की पृष्ठभूमि में

दयानन्द इंटर कालेज और दयानन्द पोस्टग्रेजुएट कालेज आजमगढ़ (गोरखपुर विश्वविद्यालय) की १६ वर्ष तक अविच्छिन्न सेवा करने के पश्चात् जब मैंने (१९७७ में) जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पोस्टग्रेजुएट कालेज, बाराबंकी (अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद) में अपना आवेदन पत्र भेजा तो अपने घनिष्ठ कविमित्र को इस आशय की सूचना दी कि वे मेरे लिए वहाँ समुचित प्रयास करें तो उनका जो उत्तर मुझे मिला, वह हैरान करने वाला था। मेरे उस कविमित्र ने लिखा था- "आर्य जी, आप इस बार यहाँ आवेदन न करें क्योंकि यहाँ मेरी नियुक्ति सुनिश्चित है। इसके बाद स्थान रिक्त होने पर पद विज्ञापित होगा, तभी आवेदन करें और अपनी सफल नियुक्ति की प्रतीक्षा करें।" मेरी हैरानी का कारण यह था- मेरे कवि मित्र के पास एम.ए.हिन्दी की उच्च श्रेणी की डिग्री भी नहीं है, पी-एच.डी. तो इन्होंने की नहीं है, कोई शोध ग्रंथ भी इनका प्रकाशित नहीं है, तो फिर भला किस आधार पर ये अपनी नियुक्ति के लिए शत प्रतिशत आश्वस्त हैं। विस्तृत विवरण में न जाकर यहाँ इतना संकेत ही बहुत है कि जब मैं उक्त कालेज में साक्षात्कार हेतु आया तो एक से एक योग्यता वाले ५६ अभ्यर्थी मौजूद थे किन्तु मेरे कविमित्र के पक्ष में कोई हवा नहीं थी।

ईश्वरीय व्यवस्था के अन्तर्गत मेरी नियुक्ति यहाँ हो गई। और उसी वर्ष जब २६ जनवरी का पर्व आया तो काव्य रसिक प्राचार्य ने मुझे काव्यपाठ हेतु आमंत्रित किया; मैंने अपनी स्वाभाविक लय में 'नारी जीवन' सम्बन्धी कविता सुनाई। काव्यपाठ की मिली जुली प्रतिक्रिया हुई। मेरे सहयोगी एक प्राध्यापक में मुझे बताया- यह कविता तो आपके कविमित्र यहाँ स्वरचित कहकर सुना गये थे। आपने उनकी कविता क्यों कर सुनाई? मुझे बाराबंकी आकर पता चला कि कविताओं की चोरी किस तरह होती है। यद्यपि मुझे सन्तोष इस बात का था कि मेरी कविताएँ लोगों को इतनी पसन्द हैं कि कविगण उनकी चोरी करने के लिए बाध्य हैं। तथापि मैंने उसी समय यह निर्णय भी लिया कि इन कविताओं का संकलन पुस्तकाकार प्रकाशित करना इन्हें चोरी से बचाने के लिए बेहद जरूरी है!

उसी वर्ष- लखनऊ में आचार्य ओजोमित्र शास्त्री द्वारा संचालित आर्य समाज अलीगंज (महावीरगंज) के वार्षिकोत्सव में मैं व्याख्यान हेतु गया तो कवि इन्द्र जी (छपरा, बिहार) से मेरी भेंट हुई- उन्होंने अपनी 'इन्द्र गीतांजलि' नामक पुस्तक मुझे भेंट की। 'इन्द्र गीतांजलि' में कवि इन्द्र द्वारा रचित कविताएँ-गीत संकलित थे। सुन्दर सी पुस्तक में मैंने देखा यहाँ भी मेरी 'नारी जीवन' सम्बन्धी वही कविता संकलन की शोभा बढ़ा रही थी।

'धधकते पृष्ठ' के माध्यम से आज मैं कविता की उर्वरा धरा- सीतापुर को नमन करता हूँ, जहाँ मेरी प्रथम कविता ने जन्म लिया। गुरुवर श्री कृष्ण किशोर को नमन करता हूँ, जिन्होंने मेरी उक्त रचना को देखा तथा सुझाव भी दिये। 'नारी जीवन' सम्बन्धी इस कविता में द्रौपदी की आँखों के लिए 'डबडबाई' विशेषण गुरुवर किशोर जी की ही देन है। आर्य समाज सीतापुर को मेरा नमन है, जहाँ रहकर मैंने स्वर्ण जयन्ती समारोह में देश के अनेक ख्यातिलब्ध वक्ताओं को देखा सुना, सराहा। उन्हीं में श्री प्रकाशवीर शास्त्री के भाषणों और उनके सौम्य व्यक्तित्व ने मुझपर अमिट प्रभाव डाला। मेरी दो कविताएँ ऐसी हैं, जिनकी भावभूमि श्री शास्त्री जी की है, भाषाभाव, छंद मेरे हैं, शास्त्री जी को कोटि कोटि प्रणाम!

पुरानी बातों को याद करें तो १९५९-६० में मैं लखनऊ वि.वि. में एम.ए. हिन्दी प्रथम वर्ष का छात्र था; द्वितीय वर्ष की कक्षा चल रही थी, हिन्दी प्रोफेसर पढ़ा रहे थे, मैं बरामदे से किसी कार्यवश जा रहा था, उन्होंने मुझे बुलाया। मैं सकपका गया- क्या गलती हो गई, जो प्रोफेसर साहब ने इस तरह बुलाया- कहीं मेरे बदामदे से गुजरने पर उनके पढ़ाने में कोई व्यवधान तो नहीं पड़ा किन्तु मेरे पहुँचने पर उन्होंने कहा, 'अपनी वह कविता आज सुनाओ, जो नारी जीवन पर तुमने लिखी है। 'ये निसोच उर अपडर बीता'- मेरा असमंजस जाता रहा- मैंने उनकी एम.ए.द्वितीय की कक्षा में वह कविता सुना दी- 'मत कहना आंचल में दूध और आँखों में केवल पानी है'- सभी प्रसन्न थे- अनेक छात्र छात्राओं ने उक्त कविता की प्रतिलिपि मुझसे प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की थी। इस कविता में चार ऐतिहासिक दृश्य बंध हैं- सभी में अग्नि धधक रही है- रामायण, महाभारत, चूड़ावत हाड़ारानी, पद्मिनी का जौहर! 'धधकते पृष्ठ' काव्य में आपको इस कविता की आग से गुजरना होगा।

जब साहित्य की समझ रखने वाले विद्वान् डॉ.कन्हैया सिंह (आजमगढ़) से मैंने काव्य प्रकाशन की चर्चा की तो डॉ.सिंह ने कहा पुस्तक का कोई उपयुक्त नाम पहले सोचिए! मैं अपनी राष्ट्र-गौरव पर आधारित रचनाओं की पुस्तक के लिए उपयुक्त नाम खोज रहा था, तभी 'आर्य लोक वार्ता' के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित लेख के शीर्षक पर नजर पड़ी- 'धर्म की बलिवेदी पर बलिदान हो गया चित्तौड़! - ओजकवि श्रीश्यामनारायण पाण्डेय ने जीवंत किया इतिहास का एक धधकता पृष्ठ' महारानी पद्मिनी के जौहर व्रत को लेकर लिखे गये लेख का अत्यंत उपयुक्त शीर्षक सम्पादक मंडल के शीर्ष पुरुष श्री अमृत खरे ने दिया था। मैंने अनुभव किया कि मेरी रचनाओं के लिए 'धधकते पृष्ठ' से उपयुक्त नाम और क्या होगा क्योंकि प्रत्येक रचना धधक रही है, युद्ध की अग्नि में जल रही है। यदि महारानी पद्मिनी के जौहर व्रत की गाथा को धधकता पृष्ठ कहा जाता है तो जो हमारे देश के नवजवान अभी हाल ही के पाकिस्तान आक्रमण का सामना करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए, जो सैनिक सैन्य उपकरणों के अभाव में भी चीन से देश की रक्षा करने में शहीद हुए, उनकी बलिदानी कहानी 'धधकते पृष्ठ' क्यों नहीं? इन रण बांकुरों की वीरता और शौर्य, हल्दीघाटी के शूरमाओं और गोराबादल के बलिदान से कमतर कैसे हो सकती है? वे युद्ध तो क्षेत्र विशेष की रक्षा के लिए हुए थे। पाकिस्तान के विरुद्ध और नेफा लद्दाख की बर्फीली पहाड़ियों में चीन के विरुद्ध संघर्ष में तो सम्पूर्ण भारत की स्वतंत्रता दांव पर लगी हुई थी। चीन के आक्रमण से हक्का बक्का तत्कालीन प्रधानमंत्री पं.जवाहर लाल नेहरू- यह आदेश देकर श्रीलंका चले गये थे- "Freedom is imperial deffend it with all you might." सैनिकों के पास न तो ठंड के बचाव की वर्दी थी और न आग उगलने वाली बन्दूकें! उस महा बलिदान की गाथ जब एक समारोह में जवाहरलाल जी ने कोकिल कंठी लता मंगेशकर के करुण स्वरों में कविवर प्रदीप द्वारा लिखित गीत में सुनी तो नेहरू जी की आँखें भर आई थीं-

जब घायल हुआ हिमालय, खतरे में पड़ी आजादी,
जब तक थी साँस लड़े वो, फिर अपनी लाश बिछा दी।
संगीन पे धर कर माथा, सो गये अमर बलिदानी,
ऐ मेरे वतन के लोगों, जरा आँख में भर लो पानी।
जो शहीद हुए हैं उनकी, जरा याद करो कुर्बानी।

'धधकते पृष्ठ' उन्हीं सूरमाओं की गौरव गाथा है। यह अमर शहीदों के प्रति विनत श्रद्धांजलि है-

बहनों ने अपने भाई वार दिये,
पर भाई ने अपने सर हर बार दिये,
जिन माताओं ने निज आँखों के तार दिये,
जिन सुहागनों ने मंगलसूत्र उतार दिये।

जिन ललनाओं ने रखने माँ की मुखलाली,
अपने सिंदूरों की लाली ही दे डाली,
प्रज्ज्वलित चिता की उष्ण आग भूलना नहीं,
खाली गोदें, उजड़े सुहाग भूलना नहीं।

यहाँ अब एक प्रश्न का उत्तर देना जरूरी है। आखिर 'धधकते पृष्ठ' में कुल रचनाएँ द्वादश (१२) ही क्यों है? यह संख्या ११ हो सकती थी, १३ हो सकती थी, बारह क्यों है? द्वादश अर्थात् १२ संख्या में खास बात है। वैदिक देवताओं की कुल संख्या तेंतीस है, जिसमें मुख्य हैं-द्वादश आदित्य। इन्हीं द्वादश आदित्यों में पूरा वर्ष समाहित है। इसी तरह मेरी प्रत्येक रचना आदित्य सदृश है। इन बारह रचनाओं में आग है। सभी बारह रचनाएँ धधक रही हैं। आप कह सकते हैं- एक रचना 'मातृ स्मृति' में तो करुण है, वात्सल्य है, शान्त हैं, इसमें आग कहाँ है? मैं कहना चाहूँगा इसमें भी आग है! कवि के समक्ष तमसा नदी (आजमगढ़) का तट है, लहरें हैं, वहीं धू धू करके 'माँ' की चिता जल रही है, उसी आग से कविता जन्म ले रही है।

बताते चलें माता जी का नाम सुखरानी देवी था। अंतिम दिनों में वे मेरे पास आजमगढ़ में थीं। वहीं १९६५ में उन्होंने अंतिम साँस ली। हरदोई जिले के तहसील संडीला के अन्तर्गत पिथान खेड़ा जैसे छोटे से गाँव में जन्मी माता जी की अंतिम यात्रा में सैकड़ों लोग शामिल हुए थे। आर्य समाज आजमगढ़ के सदस्य, डी.ए.वी.इन्टर कालेज के प्राध्यापक, कविगण, पत्रकार, पुरानी कोतवाली के स्वर्णकार इत्यादि। वैदिक विधि से अंतिम संस्कार हुआ, चिता की धधकती अग्नि से ही कविता की ये पंक्तियाँ फूट पड़ीं-

वैभव अपार जीवन में,
यह संभव है मिल जाये।
मधुरिम मनोज्ञ सपनों का,
कमनीय कुसुम खिल जाये।
नवनिधियाँ मिल सकती हैं,
मिल सकती है सुख सुविधा।
पर नहीं मिलेगी केवल,
तू ही मेरी प्यारी माँ।।

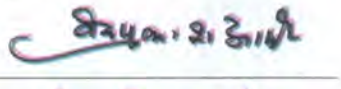

'धधकते पृष्ठ'-एक अभिमत

डॉ.वेद प्रकाश आर्य इस देश के वीररस के श्रेष्ठ कवियों यथा श्रीश्यामनारायण पाण्डेय, रामधारी सिंह दिनकर, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि की परम्परा के कवि हैं। उनकी नव प्रकाशित पुस्तक 'धधकते पृष्ठ' यथा नाम तथा गुण वाली कहावत को शब्दशः चरितार्थ करती है, इसकी अधिकांश कवितायें राष्ट्रप्रेम से धधकते हृदय के भावों का शब्दांकन हैं-

कितने गोरी कितने ग़ज़नी
कितने चंगेज देख डाले,
कितने नौरंग रंगहीन किये
कितने अंगरेज देख डाले।

हृदय के इस धधकने का प्रमुख कारण होता है वह इतिहास जिसमें हम परिस्थितिजन्य परवशता को भोग चुके होते हैं एवं त्याग और बलिदान की वे वीरगाथायें जिन्हें याद कर कायर से कायर व्यक्ति के रोंये खड़े हो जाते हैं। डॉ.आर्य की इन कविताओं में भी उस इतिहास का समावेश होना स्वाभाविक है। उस इतिहास का सामान्य शब्दों एवं सुग्राह्य भाषा में पाठक के मन को उद्वेलित कर देने वाला प्रस्तुतीकरण कवि की अपनी विशेषता है-

मत कायर कह देना यह
वीरता हमारा पैतृक धन है,
तीर टूट गिरते टकराकर
पाया वह फौलादी तन है।

भगत सिंह शेखर बिस्मिल में
मिटने का विश्वास न होता,
आजाद हिंद की फौज न होती
नेता वीर सुभाष न होता।

ये कविताएँ देश के आंतरिक एवं वाह्य शत्रुओं को इंगित भी करती हैं और उन्हें ललकारती भी हैं-

समझाता हूँ मत छेड़ो झालामाना को
मत छेड़ो फिर से मालसुरे के ताना को,
मत छेड़ो बाबू कुँवरसिंह मरदाना को
मत छेड़ो फिर से कानपूर के नाना को।

अलंकृत एवं साहित्यिक होते हुए भी कवितायें गेय एवं मंचीय हैं।

मुझे विश्वास है कि कविवर डॉ.वेद प्रकाश आर्य की इन कविताओं का सामान्य एवं विशिष्ट दोनों श्रेणियों के पाठकों में भरपूर स्वागत होगा।

-महेश चंद्र द्विवेदी
१/१३७, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ

एक सार्थक दिशादर्शन

'धधकते पृष्ठ' संग्रह की कविताएँ अपनी कहन से कथन शैली से पाठक को कभी चमत्कृत करती हैं, तो कभी अभिभूत! कविता होते हुए भी इनमें तार्किकता है, उदाहरण हैं, अन्तर्कथाएँ हैं! भावुकता होते हुए भी इनमें यथार्थ है, सत्यप्रियता है, सार्थक दिशा-दर्शन है! इतिहास होते हुए भी इनमें वर्तमान का दिग्दर्शन है, भविष्य का आकलन है।...और यह सब संभव बनाती एक संस्कारवान और भाव-भूषित भाषा है। शब्द, वाक्यांश और वाक्य इस तरह से गुम्फित हो कर सामने आते हैं कि उनका अपना अस्तित्व समाप्त हो जाता है और वे जिस भाव, विचार, चिन्तन, मनन, अभिव्यक्ति, आह्वान का प्रतिनिधित्व कर रहे होते हैं, वे स्वयं साक्षात चित्रवत सामने खड़े हो जाते हैं!

डॉ.वेद प्रकाश आर्य को शब्दों के संयुजन से मंत्र जैसी दीप्ति जन्मने की दैवी क्षमता सहज प्राप्त है। यह क्षमता रस, छंद, अलंकार, प्रतीक, बिम्ब आदि के दबावों से मुक्त है, किन्तु इनके सहज परिपाक से युक्त भी है। 'नियति, तेरे पृष्ठ पर मोतियों जैसा जड़ा हूँ', 'सृष्टि के सौंदर्य में शमशान को रहने न दूँगा!', 'बदल चुका है लक्ष्य अगर, सन्धान बदलना ही होगा।' 'मरने का शेष विकल्प तुम्हें ललकार रहा!' 'है पराधीनता से बढ़कर संताप नहीं!' 'उन बड़ी बड़ी आँखों में जलती थी मशाल!' 'वे चिन्ह प्रणय के तड़क-तड़क कर टूट गये!' 'वे साहस के अपराधी थे, नभ के तारे से टूट गये!' 'उस राष्ट्र-यज्ञ के ईंधन बन वे जले, मगर निर्धूम जले!' जैसी सिद्ध पंक्तियाँ कवि की साधना की कहानी कहती हैं।

डॉ.हरिवंश राय बच्चन का कहना है कि कविता को आँखों से नहीं, मुख से पढ़ना चाहिए। 'धधकते पृष्ठ' की कविताएँ मुख से पढ़े जाने पर प्रभाव के नये-नये आयाम खोलती चलती है। जिन्होंने डॉ.आर्य को काव्यपाठ करते हुए देखा-सुना है, उन्होंने कवि और कविता की आग की आँच को जरूर अनुभव किया होगा। अपने समय के वाचिक कविता के कवियों की तरह डॉ.आर्य की कविता में भी विमुग्धकारी भाव और नाट्य-तत्व भरपूर मिलते हैं, लेकिन साहित्य, धर्म, संस्कृति और दर्शन का गहरा जुड़ाव उन्हें फिसलने से बचाता रहता है। जगह-जगह चटक संवाद और मुँहबोले मुहावरे रोचकता तो पैदा करते रहते हैं, किन्तु अर्थ-गाम्भीर्य कहीं, कभी कमजोर नहीं पड़ता!

-अमृत खरे
२/६०, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ

सम्मान समारोह के अतिथियों का परिचय

जिन्होंने अपनी उपस्थिति से समारोह को गरिमा प्रदान की

ठाकुर विक्रम सिंह

अध्यक्ष, मनु संस्कृति संस्थान, दिल्ली

ठाकुर विक्रम सिंह का जन्म एक उच्च राजपूत परिवार में 19 सितम्बर 1943 को हुआ। पूज्य स्वामी भीष्म जी महाराज ने आपका नामकरण किया। आपके दादा लटूर सिंह जी ने स्वामी दयानन्द जी महाराज के मेरठ में सूरज कुंड पर दर्शन किये थे। महाराज जी ने उन्हें आशीर्वाद दिया और तभी से आपका परिवार आर्य समाजी है। मेरठ यूनिवर्सिटी से आपने एम.ए. किया। साथ ही आर्य समाज के उपदेशक विद्यालय में पढ़कर वैदिक सिद्धान्तों का विशेष अध्ययन किया। पूज्य अमर स्वामी जी महाराज एवं पं.रामचन्द्र देहलवी के चरणों में बैठकर शास्त्रार्थ के गुर सीखे और 20 वर्ष आर्य समाज की सेवा की। फिर अपना व्यापार प्रारम्भ किया साथ ही मनु संस्कृति संस्थान की स्थापना कर आर्य समाज, महर्षि दयानन्द और मनु के विरोधियों को चुनौती दी। अपने संस्थान द्वारा निम्न पुस्तकों का प्रकाशन किया। मनुस्मृति के स्वर्णाक्षर, क्रान्ति की चिनगारियाँ, सोम सोपान, पाखंडी गुरु, करवा चौथ का व्रत, शोभाराम प्रेमी भजनावलि, कुरान के बारे में, गांधी नेहरू वंश, स्वामी भीष्म के क्रान्ति गीत, लटूर सिंह भजनावलि, आज का भारत पतन ही पतन, भारतीयो जागो, सिंह गर्जना कु.सुखलाल आर्य मुसाफिर, महाभारत की कहानियां, अमर स्वामी अभिनन्दन ग्रंथ आदि।

अपनी उदारता, दानशीलता इत्यादि मानवीय गुणों के कारण आज ठाकुर विक्रम सिंह का नाम सर्वत्र आदर, सम्मान एवं श्रद्धा के साथ लिया जाता है।

डॉ.कन्हैया सिंह

पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष, भाषा संस्थान, उ.प्र.

श्याम वर्ण, सौम्य आकृति, श्वेतधवल भारतीय परिधान, विद्या-विनय सम्पन्न व्यक्तित्व पर यदि आपकी किसी साहित्य-मंच पर नजर पड़ जाय; तो समझ लें कि वह डॉ.कन्हैया सिंह हैं। कई दशक पहले पूर्वांचल के साहित्य-मनीषियों की जब चर्चा होती थी तो आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डॉ.हजारी प्रसाद द्विवेदी का नाम लिया जाता था; आज डॉ.कन्हैया सिंह का नाम लिया जाता है। यह स्थान डॉ.कन्हैया सिंह ने अपनी प्रतिभा, कर्मनिष्ठा और तपश्चर्या द्वारा अर्जित किया है। जीवन के ८१ वसंत देख चुके डॉ.सिंह में आज भी युवकोचित ऊर्जा, चिन्तन शक्ति और विवेकशीलता मौजूद है, वह वर्तमान पीढ़ी के लिए स्पृहा का विषय है।

आजमगढ़ जनपद के मुख्यालय से दूरवर्ती 'धरवारा' ग्राम के एक कृषक क्षत्रिय परिवार में भाद्रपद शुक्ल अष्टमी, सन् १९३५ में जन्म लेने वाले डॉ.कन्हैया सिंह ने इलाहाबाद विष्वविद्यालय से पहले तो हिन्दी में एम.ए. किया तदनन्तर एल.एल.बी. में स्वर्ण पदक प्राप्त कर उन्होंने एक इतिहास रचा और जौनपुर के प्रख्यात तिलकधारी महाविद्यालय के विधि विभाग में प्राध्यापन कार्य प्रारंभ कर दिया किन्तु मूलतः साहित्यिक अभिरुचि आपको गृह जनपद आजमगढ़ खींच लाई- जहाँ नवोदित डी.ए.वी.डिग्री कालेज का हिन्दी विभाग आपकी प्रतीक्षा कर रहा था। आपकी सूझबूझ से डी.ए.वी. के प्राचार्य पद पर एक बहुत ही योग्य विद्वान् डॉ.शिवनारायण लाल श्रीवास्तव की नियुक्ति हुई और फिर क्या था- डी.ए.वी. कालेज उन्नति के सोपान लाँघता हुआ- अनेक विभागों, संकायों से युक्त एक गौरवपूर्ण समृद्ध कालेज बना- जो न कि केवल भवनों के विस्तार वरन् अपनी मौलिक शिक्षा-व्यवस्था तथा अनुशासन के कारण गोरखपुर विश्वविद्यालय का एक प्रमुख शिक्षण संस्थान बना। कालेज के हिन्दी विभाग में कई अध्यापक थे, किन्तु जटिल विषयों को सरल बनाकर छात्रों को हृदयंगम करा देने का अध्यापन कौशल तो डॉ.कन्हैया सिंह के ही हिस्से में था। शिक्षक और शिक्षार्थियों का स्नेह-सम्मान जैसा डॉ.सिंह को सुलभ रहा है; उसकी प्रत्येक अध्यापक की कामना रहती है।'आर्य लोक वार्ता' के स्थापना काल से ही डॉ.कन्हैया सिंह की शुभाकांक्षा प्राप्त होती रही है।

डॉ.कन्हैया सिंह आजमगढ़ की उस उर्वरा धरा की खान से निकले हुए हुए रत्न हैं; जो पहले से ही मौलाना शिबली, जामी चिरैयाकोटी, कैफी आजमी, आचार्य चन्द्रबली पाण्डेय, कविसम्राट अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', आचार्य पं.लक्ष्मीनारायण मिश्र, वीर रसावतार श्री श्यामनारायण पाण्डेय, विद्यागुरु श्री विश्वनाथ लाल 'शैदा' जैसे प्रख्यात कवि कोविदों की जन्मदात्री रही है। आजमगढ़ की प्रशस्ति में आजमगढ़ के ही एक लोकप्रिय शायर स्व.इकबाल सुहैल की पंक्तियाँ डॉ. कन्हैया सिंह के व्यक्तित्व पर सटीक बैठती हैं-

इस खित्तए-आजमगढ़ पै मगर, फैजाने तजल्ली है यकसर।
जो जर्रा यहाँ से उठता है - वह नैयरे आजम होता है।।

कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य

पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष, सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

सार्वदेशिक सभा के एक दशक से अधिक लम्बे कार्यकाल में आनन्द बाबू के नेतृत्व में चार बृहद् अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन आयोजित हुए। मारीशस, सूरीनाम, अमेरिका तथा दिल्ली में आयोजित इन महासम्मेलनों में उनके अध्यक्षीय भाषण- उनकी विद्वत्ता का परिचय देते हैं, साथ ही अनेक उपयोगी सुझावों की बानगी प्रस्तुत करते हैं। इन दिशादर्शक भाषणों का प्रकाशन हो चुका है- गतवर्ष प्रकाशित 'कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य अभिनन्दन ग्रंथ' में।

सुदूर आसाम, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, बिहार में आनन्द बाबू ने आर्य समाज के संगठनात्मक ढांचे को सुदृढ़ किया। आज भी वे सरयूबाग, अयोध्या में रामजन्मभूमि स्मारक के प्रेरक प्रस्ताव के रूप में महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रन्थ 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' का भव्य स्मारक निर्माण की परियोजना पर कार्य कर रहे हैं। आर्य संस्थाओं के उद्धार, निर्माण और उनके सफल संचालन की जो कला आनन्द बाबू के पास है, वह आर्य जगत ही नहीं, देश के गौरव की विषय-वस्तु है। मुस्लिम बहुल टाण्डा (अम्बेडकरनगर) में मिश्री लाल आर्य कन्या इंटर कालेज की दो दो प्रधानाचार्यों का राष्ट्रपति सम्मान मिलना, आनन्द बाबू के प्रेरणादायी नेतृत्व का ही प्रतिफल है।

श्वेत खादी परिधान- कुर्ता, पाजामा या धोती, सदरी, पैरों में चप्पल और आँखों में चश्मे के मध्य आनन्द बाबू का गौर व्यक्तित्व निखर उठता है। इक्यासी वर्ष की आयु में भी वे उत्साह, ऊर्जा समन्वित युवा मालूम होते हैं। उनके वक्तृताओं में माधुर्य है। एक एक शब्द सारगर्भित, सार्थक, भावपूर्ण होता है। उनके शब्द श्रोताओं के हृदय में सीधे उतरते चले जाते हैं। वे आर्य जगत के सर्वाधिक सुलझे हुए प्रभावशाली वक्ता हैं।

क्या ही अच्छा हो, आनन्द बाबू के अनुभवों, ईमानदारी और क्षमताओं का उपयोग करते हुए आर्य जगत के सर्वमान्य स्वामी प्रणवानन्द जी दानवीर ठा.विक्रम सिंह जी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा साथ बैठकर फिर से एक बार ऐसा निर्णय लें जिससे आर्य समाज का शीर्ष संगठन एकता और सामर्थ्य का परिचायक बने। जैसा कि वेद मंत्र का आदेश है-

समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मंत्रमभि मंत्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।
'हों विचार समान सबके- चित्त मन सब एक हों।'

महेश चन्द्र द्विवेदी

पूर्व पुलिस महानिरीक्षक, उ.प्र.

जन्म - ७ जुलाई १९४१, माना कोठी, इटावा (उ.प्र.)

जीवन यापन- १९६१-६२-अध्यापन, आई.टी.कालेज, लखनऊ; १९६३-साइंटिस्ट-डी.आर.डी.ओ.दिल्ली, १९६३-२००१- आई.पी.एस.

कृतियाँ -उर्मि, एक बौना मानव, सत्यबोध, लव जिहाद, इमराना हाजिर है (कहानी-संग्रह); मानिला की योगिनी, भीगे पंख (उपन्यास); क्लियर फंडा, भज्जी का जूता, प्रशासकीय प्रसंग, वीरप्पन की मूंछें, महेशचंद्र द्विवेदी के ५१ व्यंग्य (व्यंग्य-संग्रह); सर्जना के स्वर, अनजाने आकाश में (कविता-संग्रह)

विदेश यात्रा- स्विट्जरलैण्ड, लंदन, वूल्वरहैम्पटन, डिट्रौइट, सिन्सिनाटी, राली, शिकागो, एटलांटा, बर्मिंघम, विश्व हिंदी सम्मेलन न्यूयार्क, अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन दुबई, शतो द लाविनी राइटर्स रेजीडेंसी स्विट्जरलैंड आदि।

पुरस्कार-सम्मान- सराहनीय सेवाओं हेतु पुलिस पदक, विशिष्ट सेवाओं हेतु राष्ट्रपति का पुलिस पदक, मानवाधिकार संरक्षण समिति छत्तीसगढ़ द्वारा भारतश्री, आल इंडिया कॉन्फ्रेन्स आफ इंटेलेक्चुअल्स द्वारा यू.पी.रत्न, संस्कार भारती (फर्रूखाबाद), साहित्यानंद परिषद् (खीरी), सोनांचल साहित्यकार संस्थान (सोनभद्र), भारत विकास परिषद (इटावा), अखिल भारत वैचारिक क्रांति मंच (लखनऊ), हिंदी प्रसार निधि (बिथूना), अखिल भारतीय वागीश्वरी साहित्य परिषद् (लखनऊ), महाकोशल साहित्य एवं संस्कृति परिषद् द्वारा भारत-भारती, हिंदी एवं संस्कृति प्रसार समिति भारत द्वारा हिंदी रत्न, इटावा हिंदी सेवानिधि द्वारा गंगदेव सम्मान, शब्द-सरिता द्वारा काव्य रत्न, डॉ.सुरेश चंद्र शुक्ल राष्ट्रभाषा पुरस्कार, अखिल भारतीय ब्रजसाहित्य संगम मथुरा द्वारा कलारत्न, उ.प्र.हिन्दी संस्थान द्वारा शरद जोशी सर्जना पुरस्कार, अखिल भारतीय अगीत परिषद् लखनऊ द्वारा शिवमंगल सिंह सुमन पुरस्कार, अखिल भारतीय अंबिका प्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कार आदि।

पता-ज्ञान प्रसार संस्थान, १/१३७, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।

इं. जे.पी. अग्रवाल

पूर्व मुख्य अभियन्ता, सिंचाई विभाग, उ.प्र.

लखनऊ के आर्य सामाजिक क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाले श्री जे.पी.अग्रवाल का पूरा नाम जय प्रकाश अग्रवाल है। दिसम्बर १९३५ में सहारनपुर में जन्मे जे.पी. के पिता लाला मिट्ठनलाल तथा पितामह लाल मुसद्दीलाल थे। आपका जन्म एवं पालन पोषण वैदिक संस्कारों की छाया तले हुआ क्योंकि पितामह लाला मुसद्दीलाल सहारनपुर के सौभाग्यशाली लोगों में थे, जिनका उपनयन संस्कार उस समय महर्षि दयानन्द सरस्वती के सान्निध्य में हुआ था। लखनऊ विश्व विद्यालय से एम.एस-सी. तथा रुड़की विश्व विद्यालय से सिविल इंजीनियरिंग की उपाधियों से अलंकृत होकर श्री अग्रवाल सिंचाई विभाग व निर्माण निगम में सहायक अभियन्ता से प्रारंभ करते हुए मुख्य अभियन्ता तक की सेवा यात्रा पूरी की तथा १९९९ में राजकीय सेवा से अवकाश ग्रहण किया।

बाल्यावस्था से ही आर्य समाज की गतिविधियों से आप जुड़े, १९४५ में आर्य कुमार सभा का कार्य संचालन किया। इंदिरा नगर आर्यसमाज का कार्यारम्भ भी आपके निवास स्थान (बी-२३१ इन्दिरा नगर लखनऊ) से हुआ जो कालान्तर में आर्य समाज एच.ए.एल. इन्दिरा नगर के नाम से विख्यात हुई तथा सेक्टर-६ में जिसका भवन निर्मित हुआ। आचार्य डॉ.वेद प्रकाश आर्य के संयोजन में गठित वैदिक शोध एवं शिक्षा संस्थान के आप अध्यक्ष बने। सम्प्रति आर्य लोक वार्ता के प्रकाशन में आपका योगदान उल्लेखनीय है।

सन् २००२ में आपने उत्तराखण्ड में गायत्री लोक कनखल हरिद्वार को अपना स्थायी आवास बनाया। सन् २०१४ में आपकी सहधर्मिणी श्रीमती कमल अग्रवाल के आकस्मिक निधन ने आपके जीवन को झकझोर कर रख दिया। तथापि आपने अपनी योगशक्ति के बल पर अपनी स्थिति को संभाला तथा अपने को अधिक से अधिक लोकोपकारी कार्यों में लगा दिया। आर्य समाज बी.एच.ई.एल. हरिद्वार तथा आर्य वानप्रस्थाश्रम जैसी संस्थाओं से सक्रिय रूप में सम्बद्ध रहते हैं।

आर्य लोक वार्ता के प्रति आपके स्नेह का यह प्रतिफल हुआ कि आपने श्रीमती कमल अग्रवाल की पुण्य स्मृति में २०१४ में वैदिक यज्ञ का आयोजन आर्य समाज भेल हरिद्वार में किया, जिसमें आर्य लोक वार्ता के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य को सपरिवार आमंत्रित किया। आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह का उद्घाटन करते हुए अपने सद्विचारों से आपने सभी का मन मोह लिया।

आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह - 2018

बायें से- अमित वीर त्रिपाठी, राजपाल शास्त्री, आलोक वीर, रज्जू भैया, डॉ.वेद प्रकाश आर्य, सर्वमित्र शास्त्री, आनन्द बाबू, ठ.विक्रम सिंह, डॉ.निष्ठा वेदालंकार, प्रत्यूषरत्न पाण्डेय, पाल प्रवीण

समारोह ने दिये समाज को जीवन देने वाले तीन संदेश

संसद और विधान सभाओं को श्री-हीन होने से बचायें

-ठाकुर विक्रम सिंह

'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-२०१८' के मुख्य अतिथि राष्ट्र निर्माण पार्टी, नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह ने लखनऊ के प्रबुद्ध जनों से भरे हुए राय उमानाथबली प्रेक्षागृह में कहा- 'राष्ट्र के योग क्षेम का वहन करने वाली शान्ति और सुव्यवस्था की जिम्मेदार लोकसभा, राज्य सभा और विभिन्न प्रान्तों की विधान सभाओं की गरिमा दिन प्रतिदिन श्रीहीन होती जा रही है। जिस संसद की कार्यवाही पर प्रति मिनट ढाई लाख रुपये खर्च किये जाते हैं, आज वहाँ आरोप-प्रत्यारोप, नारेबाजी और कार्य स्थगन का बोलबाला है। धक्का मुक्की, कुर्सी फेंकना, माइक तोड़ना, कागज के गुब्बारे छोड़ना जैसे कृत्य विवेक, विचार और संयम का स्थान लेते जा रहे हैं। और तो और आर्य जनों ने यह धारणा बना ली है कि संसद और विधान सभाएँ हमारे लिये नहीं बनी हैं, बल्कि इनमें बैठने का तो हुल्लड़, हुड़दंग और गतिरोध सक्षम लोगों का ही अधिकार है।'

आर्य नेता ने कहा- 'इस स्थिति को बदलना होगा। अब समय आ गया है, आर्य समाज और उससे जुड़ी हुई संस्थाओं के लोगों को राजनीति में सक्रिय होने के लिए कमर कस लेना चाहिए।'

ठाकुर विक्रम सिंह ने बताया कि स्वयं स्वामी दयानन्द ने युवावस्था में सन् १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था और स्वातंत्र्य चेतना जगाने में अहम भूमिका निभाई थी। आचार्य दीपंकर ने अपनी पुस्तक दयानन्द चरितम् में बहुत पहले यह तथ्य प्रमाणित कर दिया था। आर्य समाज के अनुयायियों को उस दिशा में आगे बढ़ना होगा अन्यथा देश को जबर्दस्त ढोंग, पाखण्ड, अन्धविश्वास अज्ञान, तांत्रिकों और वाममार्गियों, झाड़ फूंक, ताबीज, दरगाहों पर चादर चढ़ाने जैसी क्रियाओं की गिरफ्त में जाने से कोई रोक नहीं सकेगा। सब जानते हैं कि अज्ञान की अंतिम परिणति पराधीनता ही होती है।

आपने आर्य समाजी सांसद डॉ.सत्यपाल सिंह (केन्द्रीय मानव संसाधन राज्य मंत्री) की प्रशंसा करते हुए कहा कि डॉ.सत्यपाल सिंह ने डारविन के विकासवाद की थ्योरी के खोखलेपन की पोल खोल कर हलचल मचा दी है। ऐसे कई सत्यपाल सिंह संसद में पहुँचाने की जरूरत है। ठाकुर विक्रम सिंह के भाषण का बार बार करतल ध्वनि से उपस्थित जनसमूह ने स्वागत किया।

अयोध्या में बनेगा वेदभाष्य स्मारक

-कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य

समारोह के अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के पूर्व कार्यकारी प्रधान कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य की इस घोषणा का आर्य जनता ने करतल ध्वनि से स्वागत किया कि शीघ्र ही अयोध्या में जिस स्थान को युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने अपने पदार्पण से पवित्र किया था और जहाँ बैठकर उन्होंने अपने वेद भाष्य की रचना का शुभारंभ किया था- वहाँ पर महर्षि की पावन स्मृति में एक भव्य स्मारक का निर्माण किया जायेगा तथा एक ऐसी शोध-अनुसंधान पीठ की स्थापना की जायगी, जहाँ देश-देशान्तर के लोग आकर महर्षि की शिक्षाओं तथा वैदिक साहित्य में छिपे ज्ञान विज्ञान की निधियों की व्यापक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। आपने कहा- इस संबन्ध में प्रथम चरण की कार्यवाही- भूमि का अधिग्रहण लगभग पूरी कर ली गई है। भारत के प्रथम वैज्ञानिक संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती के महान् शिष्य पं.दीनानाथ शास्त्री तथा राजस्थान के लोकायुक्त माननीय जस्टिस एस.एस.कोठारी के योगदान की अपने सराहना की।

द्वितीय चरण- अर्थात् भवन निर्माण की कार्यवाही शीघ्र ही प्रारंभ होगी; जिसमें प्रत्येक भारतीय नागरिक विशेष कर आर्य जनों से सहयोग की अपेक्षा होगी। आपने कहा योजना के प्रारम्भ से ही 'आर्य लोक वार्ता' द्वारा इस महान कार्य में अग्रणी भूमिका का निर्वाह किया जा रहा है।

जरूरत है राष्ट्रगौरव को उद्वेलित करने वाली कविताओं की

-डॉ.कन्हैया सिंह

देश में आज साहित्य सृजन के नाम पर बहुत कुछ ऐसा लिखा जा रहा है; जिसके मूल में कहीं न कहीं या तो पुरस्कार पाने की लालसा है, दलगत राजनीति की प्रधानता है, सामाजिक जातिगत विद्वेष की संकीर्ण भावना है, साम्प्रदायिक उन्माद का प्रवाह है अथवा परछिद्रान्वेषण की प्रवृत्ति है। बहुत कम ऐसा लिखा जा रहा है जो राष्ट्रीय एकता और अखण्डता में साधक हो, देशभक्ति अथवा मातृभूमि के प्रति निष्ठा और प्रेम को बढ़ावा दे रहा हो; जो समाज के अनेक वर्गों को जोड़ने का कार्य करता हो; अथवा गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर के शब्दों में 'एक हृदय हो भारत जननी' की उक्ति को साकार और सार्थक बनाता हो। सम्मान समारोह के समापन सत्र में 'धधकते पृष्ठ' काव्य चर्चा संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ.कन्हैया सिंह ने कहा कि 'धधकते पृष्ठ' की समस्त रचनाएँ देश प्रेम और राष्ट्रगौरव को उद्बुद्ध करने वाली हैं। इन कवितओं की आज देश और समाज को महती आवश्यकता है। जब तक विद्यालयों में छात्र छात्राएँ देश प्रेम को उभारने वाली ऐसी हृदयस्पर्शी कविताओं को याद नहीं करेंगे, उन्हें गायेंगे नहीं, गुनगुनायेंगे नहीं, हमारी राष्ट्र निर्माण की उन्नति और समृद्धि की योजनाएँ धरी की धरी रह जायेंगी।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरानगर, लखनऊ-226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
: 7310119999

नवोन्मेष
कृष्णा जी. पिंटेक

E-mail - aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	15,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–

बैंक–बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा
सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ
डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक', लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
विश्वमित्र, एडवोकेट, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी–2, हिमांशु सदन, 5–पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.–इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।